पूजन

परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज एवं परम पूज्यआचार्य श्री108 समयसागर जी महाराज

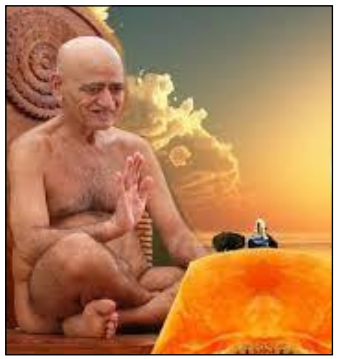
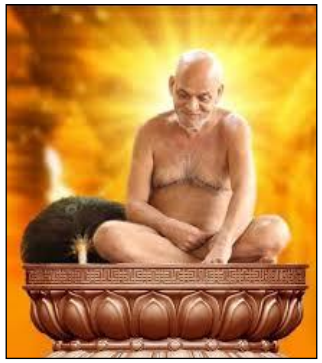

रचियित्री : - आर्यिका श्री 105 भावना मति माता जी

स्थापना (ज्ञानोदय छंद)

विद्यासागर भगवन मेरे ,हृदयासन विराजो जी
सम्प्रति समयाचार्य गुरुवर , मन मंदिर में पधारो जी
भक्तिभाव से चरणोदक ले , अतिशय पुण्य कमाओ जी
शीघ्र खुलेंगे भाग्य तुम्हारे , चरण शरण में आओ जी

ओमह्रूं प. पू. अष्टोत्तर शताचार्य श्री विद्यासागरजीएवं प. पू. आचार्य श्री समयसागरजी मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम् , अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

(द्रव्यार्पण)

जन्म – जरा अरू मरण मिटाने प्रासुक जल भर लाये है
विद्यागुरुअरु समय सूरि की पूजन करने आये हैं

ओमह्रीं करुणामूर्ति प. पू. आचार्यश्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आचार्य श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

भव भव का संताप मिटाने चंदन सुरभित लाये हैं ।
विद्यागुरु अरु समय सूरि की पूजन करने आयें हैं ।।

ओमह्रीं वात्सल्य मूर्ति प. पू. आचार्यश्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आचार्यश्री समय सागर जी मुनीन्द्राय भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

अजर अमर अविनाशी बनने अक्षत पुंज चढ़ाये है
विद्यागुरुअरु समय सूरि की पूजन करने आये है

ओमह्रीं दयामूर्ति प. पू. आ. श्रीविद्यासागर जी एवं प. पू. आचार्यश्री समयसागर जी मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्निर्वपामीति स्वाहा

शील स्वभाव को पाने हम सब भी पुष्प सुगंधित लाये है ।
विद्यागुरुअरु समय सूरि की पूजन करनेआये है ।।

ओमह्रींअभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी प. पू. आ. श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ. श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पंणि निर्वपामीति स्वाहा

जन्म जन्म की भूख मिटाने चारु – चरु हम लाये है ।
विद्यागुरुअरु समय सूरि की पूजन करने आये है ।।

ओमह्रीं वैराग्यमूर्ति प. पू. आ.श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ. श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

केवल ज्ञान की ज्योति पाने जगमग दीपक लाये हैं ।
विद्यागुरु अरु समय सूरि की पूजन करने आये है ।।

ओमह्रीं ज्ञानमूर्ति प. पू. आ.श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ.श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

ध्यान अग्नि में कर्म जलाने धूप दशांगी लाये हैं।
विद्यागुरु अरु समय सूरि की पूजन करने आये है ।।

ओम ह्रीं समतामूर्ति प. पू. आ.श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ.श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

मोक्ष महाफल पाने को हम श्रीफल सम्मुख लाये हैं
विद्यागुरुअरु समय सूरि की पूजन करने आये है ।।

ओमह्रींप्रशममूर्ति प. पू. आ.श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ. श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

अनर्घ पद को पाने हम सब अर्घ सजा कर लाये हैं
विद्यागुरु अरु समय सूरि की पूजन करने आये है ।।

ओमह्रींआगम चर्याधारी प. पू. आ.श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ.श्री समयसागर जी मुनीन्द्रायअनर्घ पद प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

(दोहा)

धरती के भगवान थे , विद्यासागर संत ।
अनंत गुण भण्डार वे , समयसूरि जयवंत ।।

(जयमाल) ज्ञानोदय छंद

शरद पूर्णिमा के दो चंदा धर्म ध्वजा फहराते है ।
संयम दीप जला कर जग में मुक्ति पथबतलाते है ।।
विद्यागुरु परमेश्वर मेरे चेतन तीर्थ हमारे हैं ।
महाश्रमण की चेतन कृति ये समयसूरि जी न्यारे हैं ।।

ज्ञान सूरि ने कहा आपसे गुरुकुल संघ बनाना है ।
विद्यागुरु ने कहा आपसे गुरु का संघ बढ़ाना है ।।
कुंद कुंद के कुन्दन हो तुम ज्ञान सूरि के नंदन हो ।
समयसार जीवन्त आप हो विद्या गुरु लघु नंदन हो ।।
त्याग तपस्या भी इक जैसी चर्या मनहर लगती है ।
सहजसौम्य हंसमुखमुद्रा जन जन के मन हरती है ।।
आभामण्डल द्वय गुरुवरका जगमग जगमग करता है ।
दर्शन करके मुनि मुद्रा के अपने दुःख सब हरता है ।।
आशीष सभी को फलता है नाम मात्र से बनता काम ।
उमड़ पड़े है भाव हमारे भक्ति करने आठों याम ।।
पूजन करके द्वय गुरूवर से इतनी विनती करते है ।
शाश्वत शरण मिले आपकी यही भावना करते है ।।

ओमह्रीं श्रमण संस्कृति उन्नायक प. पू. आ.श्री विद्यासागर जी एवं प. पू. आ. श्री समयसागर जी मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा

(दोहा)

गुरुद्वयके आशीष से जगे धर्म के भाव
अक्षय पद की “भावना” पार लगा दो नाव ।।

पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

शैलेन्द्र जैन अरिहंत कंप्यूटर सिवनीमो- 9300285082